Dr. Madan Paswan, History.
Class :- B.A. Part-II (Hons.) P-III rd
Topic : Unit-II (c) Muhammad Bin Tughlaq.
Continue of Lecture no. 57.

Lecture no. 58
Date- 14.05.2020
From page no. 1 to 2.

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने अनेक पदाधिकारियों, सूफी संतों के साथ अन्य प्रधान लोगों को देवगिरि जाने का आदेश दिया। लेकिन दिल्ली के बाकी लोगों को वहाँ ले जाने के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया गया। सुल्तान की अनुपस्थिति में भी दिल्ली एक महान शहर बना रहा तथा पहले की तरह प्रशासन सशक्त रूप से चलता रहा। इसका प्रमाण यह है कि जब सुल्तान में बहराम किशलू खाँ ने विद्रोह किया तो दिल्ली से भेजी गयी सेना ने उसे दबाया। सिक्के अभी भी दिल्ली में ढाले जाते थे। इससे स्पष्ट होता है कि दिल्ली और दौलताबाद दोनों मुख्य प्रशासनिक केन्द्र बने रहे।

चूँकि राजधानी परिवर्तन ग्रीष्म ऋतु में की गई। अतः गर्मी और मार्ग की कठिनाईयों के कारण लोगों की मृत्यु हो गई। उनमें से अनेक लोगों ने जो दौलताबाद पहुँचे, उन्हें गृह विलोग सताने लगा। अतः उनमें भारी असंतोष आ। दो वर्षों के बाद सुल्तान ने दौलताबाद का परित्याग कर दिया।

राजधानी परिवर्तन के कारण आवागमन के साधनों को विकसित करने से उत्तर और दक्षिण भारत एक-दूसरे के निकट आ गये। इसके परिणामस्वरूप उत्तर और दक्षिण भारत में सांस्कृतिक विचारों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया आरंभ हुई।

सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन :

सुल्तान ने 1329-30 ई० में चाँदी के टंके के बराबर कांसे के रूप में सांकेतिक मुद्रा को प्रचलन में लाया। इस प्रयोग के संबंध में बरनी का विचार है कि सुल्तान ने विदेशी विजय की इच्छा से प्रेरित होकर तथा राजकोष की दयनीय स्थिति के कारण सांकेतिक मुद्रा को प्रचलित किया। परन्तु इसमें सत्यता का अभाव है। नैल्सन राईट ने सुल्तान के सिक्कों की व्याख्या के आधार पर अपना विचार व्यक्त किया है कि 1329-30 ई० में सांकेतिक मुद्रा जारी होने के समय भारत में ही नहीं, अपितु संसार भर में चाँदी की कमी हो गई थी। अतः सुल्तान ने इस बहुमूल्य धातु को बचाने के लिए ताँबे तथा इससे मिश्रित कांसे के सिक्के जारी किये। इन सिक्कों का मूल्य चाँदी के सिक्कों के समान रखा गया। यद्यपि 13वीं सदी के अन्त में चीन के मंगोल सम्राट कुबलय खाँ ने चीन में कागज का सिक्का चलाया था तथा फारस के शासक गैखातू ने 1294 ई० में इसका प्रयोग किया था तथापि सुल्तान का यह प्रयोग दो कारणों से असफल रहा। जैसे— (1.) कि यह समय से बहुत आगे था तथा लोगों का वास्तविक महत्व नहीं समझ सके। (2.) यह कि सुल्तान ने प्रतीक मुद्रा चलाने पर राज्य का एकाधिकार स्थापित नहीं किया तथा नकली सिक्का ढालने के विरुद्ध उचित सावधानी बरतने में असफल रहा।

इसका परिणाम यह हुआ कि बड़ी संख्या में जाली सिक्के बाजार में आ गये तथा उसका भारी अवमूल्यन हो गया। फलतः व्यापार एवं व्यवसाय पर बुरा असर पड़ा। अंततः सुल्तान ने चार वर्ष बाद (प्रचलन तिथि से) प्रतीक मुद्रा वापस ले लिया। उसने कांसे सिक्कों के बदले में चाँदी के सिक्के देना मंजूर किया।

(Continue...)

इस प्रकार, बहुत से लोगों ने कांस्य सिक्कों को बदल लिया। लेकिन नकली सिक्के जो परखने पर घटिया किस्म के निकले, उन्हें नहीं बदला जा सका।

खुरासान एवं कराचिल आक्रमण :—

खुरासान को जीतने की योजना के लिए सुल्तान ने 3,70,000 सैनिकों की विशाल फौज खड़ा किया, किन्तु इसे अव्यवहारिक पाकर बन्द में भाग दिया गया। जिससे भयंकर आर्थिक क्षति पहुँचा। यह अभियान तरमाशरीन (मंगोल) के साथ मैत्री का परिणाम था।

खुसरो मलिक के नेतृत्व में उसने एक विशाल सेना पहाड़ी राज्यों को जीतने के लिए भेजा किन्तु पर्वतीय भूमि तथा अत्यधिक वर्षा के कारण भीषण क्षति उठानी पड़ी तथा अन्ततः यह प्रयोग भी असफल रहा। कुछ सफलता के बाद आतिथ्य स्वीकार कर सैनिक सुदूर के क्षेत्रों में चले गये। पर्वतीय स्थानों पर सैनिक वर्षा और बीमारी का सामना नहीं कर सके। कहा गया है कि 10,000 सैनिकों में से केवल 10 लोग जीवित बचे। ऐसा प्रतीत होता है कि पहाड़ी राजा ने दिल्ली सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली।

दोआब में भू-राजस्व की वृद्धि :—

उपर्युक्त परियोजनाओं से सुल्तान की तुगलक साम्राज्य की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ा। अतः आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए तथा उत्पादन में वृद्धि करने के लिए सुल्तान ने उपजाऊ प्रदेश दोआब में कर वृद्धि की घोषणा की। यह वृद्धि लगभग 1/10 से 1/20 के बीच थी। किन्तु दुर्भाग्यवश उसी वर्ष अकाल पड़ गया तथा लगभग उत्पादन नहीं हुआ। भू-राजस्व अधिकारियों ने जबरदस्ती निश्चित भू-राजस्व वसूलने का प्रयास किया। अतः किसानों ने अपना कार्य करना बन्द कर दिया तथा जमींदारों ने लगान देने से मना कर दिया तथा जमींदारों ने लगान देने से मना कर दिया। सुल्तान ने उन्हें बन्दी बनाने तथा सजा देने के लिए कठोर उपाय किये।

(Continue ...)

— Dr. M. Paswan, Lecture no. 58 History.

Continue...
from page no. 1 to 2.

इतिहासकारों का कहना है कि अधिक कर लगाने के कारण ही अशांति हुई। इस काल में उपज के आधे अंश पर राज्य का अधिकार था। उपज का नकद मूल्य भी मनमाने ढंग से तय किया जाता था। लगातार 12 वर्षों के दुर्भिक्ष के कारण स्थिति बदतर हो गई। पशु तथा बीज खरीदने तथा कुएं खरीदने के लिए अग्रिम धनराशि के प्रयास भी देर से किये गये। अन्ततः सुल्तान ने दिल्ली छोड़ दी तथा दिल्ली से 100 km. दूर कन्नौज के निकट गंगा तट पर स्वर्गद्वारी नामक शिविर में 2 वर्ष 6 महीनों तक निवास किया।

दिल्ली वापस लौटने के बाद सुल्तान ने दोआब में कृषि विस्तार तथा उन्नति के लिए 'दीवान-ए-अमीर-ए-कोही' नामक विभाग की स्थापना की। दोआब क्षेत्र को विभिन्न विकास खण्डों में विभाजित किया गया तथा प्रत्येक विकास खण्ड में एक अधिकारी की नियुक्ति की गई। इन अधिकारियों का कार्य था — कृषि विस्तार तथा कृषकों को ऋण देना, जौ की जगह उत्तम श्रेणी का गेहूँ, गेहूँ की जगह ईख, ईख के बदले अंगूर और खजूर की खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना। परन्तु सुल्तान मुहम्मद तुगलक की यह अंतिम परियोजना भी असफल रही क्योंकि इस कार्य के लिए जो अधिकारी नियुक्त किये गये थे वे अनुभवहीन तथा भ्रष्ट थे। योजना के लिए जो अग्रिम राशि दी गई थी, उसका अधिकारियों ने दुरुपयोग किया तथा गबन कर गया।

मुहम्मद बिन तुगलक के समय के प्रमुख विद्रोह :-

⊙ सुल्तान के चचेरे भाई बहाउद्दीन गुर्शस्प जो गुलबर्गा के निकट सागर का सूबेदार था, हराकर मार दिया गया। कोंढ़न (पूना के निकट आधुनिक सिंह गढ़) के हिन्दु सामंत द्वारा, सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली गयी। मुल्तान का सूबेदार, बहराम आईबा द्वारा मारा गया। 1335 ई० में सैयद जलालुद्दीन ने स्वतंत्र माबर राज्य की स्थापना की। लाहौर का सूबेदार, अमीर हुलाजू द्वारा मारा गया। दौलताबाद के सूबेदार के पुत्र मलिक हुशंग के द्वारा, बाद में समर्पण कर दिया। अली मुबारक ने लखनौती का सुल्तान होने की घोषणा कर दी। परिणामस्वरूप बंगाल सल्तनत से अलग हो गया। कड़ा का सूबेदार, निजाम भाई द्वारा मारा गया। बीदर का सूबेदार, नुसरत खाँ द्वारा जागीर जब्त कर ली गयी। गुलबर्गा के अलीशाह द्वारा, गजनी निर्वासित कर दिया गया।

⊙ अवध का सूबेदार आईन-उल-मुल्क को दौलताबाद हस्तांतरित करने पर उसने विद्रोह कर दिया। उसे अपदस्थ कर अपमानित करने के बाद फिर से पदास्थापित कर दिया गया। उसने मुंशाते-महरु अथवा इंशा-ए-महरु नाम की पुस्तक लिखी। जिसमें फिरोज की शासन व्यवस्था का अच्छा वर्णन है। शाहू अफगान ने सुल्तान के सूबेदार को मारकर विद्रोह कर दिया बाद में शाहू पहाड़ों की ओर भाग गया। सुनम तथा समाना के विद्रोह को भी दबा दिया गया। सन् 1336 ई० में हरिहर एवं बुक्का ने दक्षिण भारत में

(Conti...)

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। अन्य महत्वपूर्ण विद्रोह अमीर-साहाह (विदेशी सामान्य अमीर) लोगों का हुआ। गुजरात में सुल्तान ने अमीर-साहाह का दमन कर दिया। देवगिरि के अमीरों ने अल्लाउद्दीन बहमन शाह के नेतृत्व में 1347 ई० में स्वतंत्र बहमनी राज्य की स्थापना कर ली। इसमें सुल्तान की आर्थिक स्थितियों की महत्वपूर्ण मांगों का लेखाजोखा हिस्सा था। बहमनी राज्य की स्थापना के बाद इसका एक आर्थिक स्थितियों के कार्यात्मक इकाई का विद्रोह माना जाता था। गुजरात के अभियान के बाद सिंह विद्रोह का एक महत्वपूर्ण भाग माना जाता था। इब्नबतूता 1333 ई० में मुहम्मद तुगलक के समय भारत आया था। सुल्तान ने उसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया तथा बाद में अपने राजदूत के रूप में चीन भेज दिया। उसकी पुस्तक रेहला में मुहम्मद बिन तुगलक के समय की घटनाओं का वर्णन है।

— Dr. Madan Paswan, Lecture no. 59 (History).